R. No १३९६७

No (४)

वातुल नाथ सूत्रम् - 20 Folios

ॐ नमः श्रीउन्मत्तकालिनीपरमशिव
भट्टारकाय॥ ॐ महासाहसवृत्त्या स्वरूप
लाभः॥१॥ तच्छक्तिपञ्चकसंघट्टित
प्रवृत्तिः॥२॥ उभयपट्टोद्दलनान्मध्यमपदा
नुप्रवेशः॥३॥ युगपद्ग्रासात् त्रिचक्रसम
संवित्तिः॥४॥ सिद्धयोगिनीसंघट्टा
न्महामेलापोदयः॥५॥ इन्द्रियकर्मपरि
ज्ञानात् त्रिगुणपरिस्पन्दवर्त्तित्वं॥६॥ का
ऽत्र ऊर्ध्वं सर्वविश्रामप्रशमः प्रवृत्तः॥
॥७॥ नमस्त्वत्पादसंस्पर्शनाद्विसर्जनतः वि

[illegible] ॥३॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥१०॥ [illegible]
[illegible] ॥११॥ [illegible]
[illegible] ॥१२॥ [illegible]
[illegible] ॥
१३॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible]

सचड्(?)पिसरम्प्सार्प्र विराणान्ते चतुर्त्रिंशि
सान्नसवं गुरुवक्त्राब्जसा ॥ सर्वेल्ल
ञ्जनघत्तेन्न त्रित्रिकेतेऽ‍ज्ञज्ञसः केपूत्र
उरसिद्धिं सप्तुंछेवेणयत्तान्न्णः सूसि
सुत्तुलनाथसूद्देसवा्सूं पिसप्तकसा
प्रणुप्रणाकप्रत्यक्षिः पूर्णिते यत्रसा
सित्ता येनेन्द्रसचवज्ञीनां सन्नसंसृपि
सचस्न सन्नवृस्ससा विश्रिं सिनुपूर्व
स्मिनिरापिलः उसप्रचसनावेसस्
सचत्रस्निकेतनसा संविमृकल्पस
कल्पपसूनं नौसूनतुरसा यैशि

𑆘𑆵𑆮𑆤𑇀𑆩𑆶𑆑𑇀𑆠𑆱𑇀𑆪 𑆥𑇀𑆫𑆳𑆟𑆳𑆤𑇀𑆠𑆼 𑆮𑆸𑆠𑇀𑆠𑆴𑆱𑇀𑆡𑆠𑇀𑆮𑆩𑇀 𑆑𑆼
𑆖𑆴𑆠𑇀 𑆥𑇀𑆫𑆠𑆵𑆪𑆠𑆼 𑆃𑆱𑇀𑆪 𑆝𑆳𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆥𑆢𑆁 𑆘𑆴𑆠
𑆓𑆭𑆴𑆑𑆴𑆬 𑆥𑆢𑇀𑆩𑆱𑆼 𑆱𑆠𑇀𑆠𑇀𑆮𑆳𑆥𑇀𑆫𑆳𑆪𑆳𑆩𑆴
𑆩𑆬𑇀𑆥 𑆥𑆢𑆠𑇀𑆫 𑆩𑆩𑆶𑆱𑇀𑆖𑆼𑆠𑇀 𑆠𑆵𑆬𑇀𑆩 𑆑𑆱𑇀𑆪
𑆩𑆴𑆥 𑆯𑇀𑆫𑆵𑆩𑆢𑇀 𑆠𑆶𑆬 𑆤𑆳𑆢𑇀𑆪𑆥𑆵𑆁 𑆱𑆶𑆢𑆠𑇀𑆑𑇀𑆱𑆶
𑆯𑇀𑆪𑆥𑆳𑆢𑇀 𑆪𑆩𑆑𑇀𑆫𑆶 𑆠𑆱 𑆠𑆥𑆳𑆩𑆳𑆢𑆩𑇀𑆱𑇀𑆥𑆢𑆁
𑆘𑆴𑆠 𑆆𑆥𑆼𑆱 𑆱𑆑𑆟𑆩𑆳 𑆑𑆳𑆑𑇀𑆱𑆳 𑆫𑆱𑆼𑆱𑆳
𑆤𑆵𑆩𑆳 𑆤𑆵𑆩𑆳 𑆩𑆴𑆫𑇀𑆪 𑆤𑆳𑆩𑆴𑆠𑆥𑆳 𑆠𑆥𑆼𑆱𑆳𑆱
𑆱𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥 𑆱𑆮 𑆤𑆴𑆫𑇀𑆮𑆳𑆬
𑆑𑆫𑇀𑆩𑆑𑇀𑆱𑆴 𑆥𑇀𑆫𑆴𑆠𑆁 𑆑𑆴𑆩𑆱𑇀𑆪 𑆤𑆮𑆑𑆳 𑆱𑆁𑆥𑆁
𑆠𑆠𑇀𑆫 𑆩𑇀𑆪𑆳𑆃𑆥𑆼𑆤𑆳𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆱𑆫𑇀𑆮𑆠𑇀𑆫 ॥

[illegible]

शङ्करभगवत्पादप्रणीतः

॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible] ॥०॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥१॥
[illegible]

ब स ३

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्रुत्वा ताम्प्रिया मन्त्रं पीतश्यात्मयापरमा
विद्याविमलतरैः स्यपस्तुवाभिवस
तभुवमत्रिः श्रितेभ्यः ॥१॥ ततो नरेन्द्रि
तं नृपं तु लक्ष्मलकर्णेरैः पदेसमन्त्रेस्तनी
पमेककर्णा निष्पयति ॥

ततः स्वयमेव सुन्दरनासक
श्रुत्वा पूर्वशः ॥२॥

श्रीमत्त्रिपुरानाथाङ्गरगुहमभयश्री
गरुमास्तनमित्रपांसैरजकपमकप
स्तरैनयापगपदि पुरिरसपस्त्रिष्टुमैव

क
म
८

𑆮𑆴𑆑𑆬𑇀𑆥𑆩𑆱𑆴, [illegible] 𑆥𑆱𑆴𑆱𑇀𑆫𑆨𑆓𑆮𑆠𑆴
𑆓𑆮𑆓𑆤𑇀𑆠𑆴 [illegible] 𑆮𑆼𑆱𑆑𑆤𑆴 [illegible]
𑆮𑆯𑆮𑆬 𑆤𑆴 𑆖 [illegible] 𑆠𑆵𑆬𑆢𑇂 𑆩 [illegible]
[illegible] 𑆥 𑆓𑆴𑆮 [illegible] 𑆮𑆥𑆱𑆓𑆓 [illegible] 𑆩
[illegible] 𑆥𑆵𑆪𑆠𑆼 𑆅 [illegible]
[illegible] 𑆩𑆠𑆪𑆳𑆩𑆳𑆩 [illegible] 𑆠𑆴𑆂
𑆩𑆳𑆓𑆮 [illegible] 𑆥𑆱𑆴𑆱𑆳 𑆓𑆩 [illegible] 𑆮𑆴 [illegible]
𑆮𑆠𑆵 [illegible] 𑆂 ॥ ५ ॥ 𑆁 𑆨𑆓𑆮𑆠𑆪𑆼 [illegible] 𑆱𑆳
𑆩𑆖𑆩𑆳 [illegible] 𑆠𑆵𑆬 [illegible] 𑆮𑆳 [illegible]
𑆥𑆴𑆩 [illegible] 𑆥𑆱𑆴𑆱𑆩𑆳 [illegible] 𑆪𑆥 [illegible]
[illegible] 𑆓𑆩 [illegible] 𑆥 [illegible] 𑆤𑆴𑆮𑆳 [illegible] 𑆤𑆠𑆴

𑆮𑆳 𑆩𑆸 ५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ਸਾ ਤ੍ਰੈਸ ਤ੍ਰੁਯਾ ਵਾ ਯੁਅਵ ਤ੍ਰਿਤਯਾ ਵਿਹ ਤ੍ਰਿ

ਸ੍ਤੁਤ੍ਯ ਸ੍ਮ ਕਮੁ ਨ ਮੰਮੁਤ ਵ੍ਰਮ ਗ ਮਾ ਸ੍ਮੰਨਾ ੭

ਨ੍ਰਿ ਵਕਾ ਸਮੰ ਵਿਤ੍ਰਿਧੁ ਨਿ ਵਕਾ ਸਵੇਯੰਮੰ

ਵਿਤਮ੍ਰਿ ਨਿਧੁ ਮਮ੍ਰਿਣਾ ਵ੍ਰਿਧਟ ਮੁਤਯਾ ਮੰਮ੍ਰਿ

ਤ੍ਰਿ ਨਿ ਵਕ ਸਮੰ ਵਿਤ੍ਰੈਨਾ ਧਿਮ ਵਿਲ੍ਪਮੰ

ਵਿਨ ਤ੍ਰੈਧੈ ਵਕ ਮੈਲਹੂਤੇ ਨਾ ਧਿਨਿਵਿਕ

ਲ੍ਪਮੰ ਵਿਤ੍ਰੁਠ ਵੇਨ ਪ੍ਰਵੇਸੈ ਪਿਨ ਮ੍ਰਿਤ੍ਰੇ ਤ੍ਰੈਮ

ਪ੍ਰਮੇ ਯਤ੍ਰਾ ਤ੍ਰਿਨਤ੍ਰਾ ਧਾਮਾ ਮ੍ਰਿਧ ਸੁਠਤ੍ਰਾ ਸ੍ਰ

ਨਿਵਕਾ ਸਮੰ ਵਿਮ੍ਰਿ ਦੈਮ੍ਰਿਤੇ ਤ੍ਰਮ੍ਰਾ ਵਿਧੁ ਵਕਤ੍ਰ

𑆥𑆶𑆰𑇀𑆥𑆱𑇀𑆠𑆶𑆓𑆷𑆢𑆱 𑆨𑆢𑇀𑆫𑆩𑆶𑆢𑇀𑆫𑆳𑆓𑆳𑆠𑇀𑆫𑆴𑆂 𑆑𑆼𑆯𑆳𑆁𑆱𑆴

𑆱𑆶𑆮𑆫𑇀𑆟𑆳𑆢𑇀𑆫𑆶𑆠𑆂 𑆱𑇀𑆮𑆁𑆱𑇀𑆠𑆶𑆪𑆳𑆯𑇀𑆖 𑆓𑆶𑆬𑆑𑆼𑆬𑆑𑆮

𑆬𑆤𑆼𑆤 𑆤𑆴𑆘𑆨𑆳𑆬𑆁 𑆖𑆵𑆠𑇀𑆫𑆣𑆳𑆤𑆴𑆂 𑆯𑆶𑆢𑇀𑆣𑆥𑆢𑆩𑆁𑆓𑆁

𑆜𑆮𑆠𑆵𑆢𑇀𑆮𑆠𑆂𑇆 𑆱𑆶𑆪𑆮𑆴𑆬𑆤𑆤𑆥𑆮𑆢𑇀𑆫𑆮

𑆯𑇀𑆫𑆵𑆫𑆁𑆥𑆪𑆩𑆱𑆢𑇀𑆓𑆳𑆓𑆩𑆤𑆴𑆑𑆪𑆼𑆥𑆑𑆸𑆠𑆱𑆤

𑆤𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶 𑆩𑆲𑆾𑆤𑆼𑆮𑆴𑆩𑆶𑆒𑆠𑇀𑆠𑆼𑇆 𑇆

𑆮𑆳𑇅 𑆩𑆶 13

𑆨𑆴𑆢𑇀𑆪𑆶𑆰𑆼𑆟𑆴𑆤𑆵𑆩𑆱𑇀𑆠𑆶

𑆩𑆢𑇀𑆓𑆨𑆠𑇀𑆠𑆳𑆪𑆼𑆱𑆩𑆳𑆥𑇀𑆠𑆂

𑇆𑇕𑇆

भिद्रुम्र ये गित्रुम्रुरः भिद्रु ये गित्रुः वि

धंको गीम्रुगीऋु पा भु मं मद्व्रु मक्नमि

गु क्रु गु फके ठयमंम्रुषः पाम्धगनु

त्रुमि गु लिङ्क नं ते ना लिङ्क नेन मनिवमद

मेल पे मयः मद मल पमृ द तुम्

उ त्रुक म्रुय विगलन त्रिद त्रु मिट्टु भि

मठं मद भ भा भृ म्रुक भृ मवर पृट क

उपे मवः भमृत्र मि ठवनी ट त्रः वे ढ्रु वेम क

मट पु मु पु क्र पा भा म्रुब भभा वेसः मद

द्रव्यस्य तद्गुणं भवति ॥ ५ ॥ ॥

तथा विनालेन भस्मीव भक्तमल्पधेमय

भस्त्रा तमन्तकाश्यपेल्लघ्वेन विनद्भवय

मध्याङ्गिकल्पं यति ॥ ॥

इति काश्यपशिक्षणा

श्रीगणेशपञ्चविंशतिः

॥ १ ॥

इति कस्तभस्म विकर्तौ तिक सुत्तेस्मरि

नसृगइत्ता विकं सव्यासृङ्गपदत्तं ज्ञार

का
म
१
त

𑆠𑆶𑆩𑆠𑆶𑆮𑆫𑇀𑆢𑇀𑆣𑆤𑆾 𑆅𑆥𑇀𑆫𑆪𑆁 𑆮𑆴 𑆬𑆵𑆪𑆠𑆶 𑆤𑆴𑆓𑆶𑆑

𑆤𑆴𑆓𑆶 𑆮𑆑𑆩𑆼𑆱𑆪 𑆤𑆴𑆱𑇀𑆠𑆶𑆓 𑆮𑆴𑆩𑆶𑆓𑇀𑆤 𑆥𑆓𑆩

𑆤𑆜 𑆱𑆴𑆠𑇀𑆱𑆶𑆬 𑆑𑇀𑆬𑆴 𑆑𑇀𑆬𑆴𑆱𑆶𑆬𑆤 𑆝𑇀𑆑 𑆥𑆶𑆰𑆩𑆩𑆥𑆤

𑆮𑆴𑆑𑆩𑆩𑇀𑆮𑆜𑆮 𑆮𑆬𑆜𑆓𑆩𑆮𑆁 𑆩𑆮𑇀𑆫𑆓𑆠𑆶𑆓 𑆩𑆠𑆾

𑆪𑆾𑆤 𑆝𑇀𑆮𑆪 𑆩𑆑𑇀𑆤 𑆩𑆩𑆓𑆩𑆶𑆝𑆪 𑆠𑆶𑆓𑆓𑆪 𑆠𑇀𑆫𑆵

𑆥𑆓𑆱𑆠𑇀𑆫𑆴

𑆥𑆾𑆠𑇀𑆫𑆴 𑆥𑆶 𑆰𑆴𑆠𑆶 𑆩𑆼𑆮𑆩 𑆤 𑆑𑇀𑆠𑆶 𑆤𑆩 𑆩𑇀𑆮𑆠𑆶𑆥𑆠

𑆩𑆮𑆥𑆶 𑆮𑆴𑆮𑆴𑆜𑆓𑆟𑇀𑆩𑆴 𑆬𑆵𑆩𑆩𑆶 𑆮𑆬𑆼𑆩𑆪𑆁

𑆮𑆤𑆥 𑆤𑆴𑆑 𑆮𑆩𑆶 𑆠𑇀𑆫𑆜 𑆠𑇀𑆫𑆵𑆩𑆶 𑆩𑇀𑆮𑆜 𑆮𑆥

𑆱𑆶𑆠𑇀𑆫𑆵 𑆠𑇀𑆫𑆴𑆮𑆶𑆥𑆝 𑆱𑆶 𑆩𑆼𑆮𑆩𑆩𑆑𑇀𑆬𑆥 𑆑𑆬𑆥 𑆤𑆴𑆮𑆑

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

मिथकड्व रुद्रैव भंद्रः गंद्रु सुयपुषाथ मि
क शङ्कनूद पतिनूद गृषिड भ्रुतिदुध भवना
यभक्लप विकल्पैल्ल भद्रुधप्र क्षिः स्तक्रप
भूमिवीम उभृवभूमिल्ल भेनधभृग भंविद्रव
दवाट्ट धृषनेनभद्रिव भचक लंधृदृकं माउग्र
दैवे दृगः तभमवन कालग भवपपभृग
गुप वश्रुतिः पद्मभपमत्रिमपनीकिवं कंम
भंविज्ञिधृ भिरुदुरुः ॥७॥ दद्रवनमद्र
मवीम उभृयकषाद्रभंधकाभृमनीमृमम

वं.
भु
७८

वन्दमत्तुगन्दमं विष्णुपदे ॥ ॥

स्तुमस्तं कान्ते सर्वेन सद्ध

सगीसि विक्रमः ॥१०॥

सतः सहितं सृष्ट्वा स्त्रीलिङ्गपुल्लिङ्गके, उभयत्र

सहितं वर्गाः सिक्त्वा स्त्रीपुंसके, एतद्गुण

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

महापञ्चके सर्वाणि
भुङ्क्ष्व भैरवेशः ॥१००॥

महापञ्चकं देवानामिष्टं वपुरेतत् भवत्कृ
मन्त्रपञ्चकमुक्तं पंचमं सर्वं नियतं नियमात्
भवत्कृतेः सिद्धि विकल्पमनुष्ठेवाच्यमनु
भित्याह इति विभुङ्क्ष्व भैरवेशः श्रीलक्ष्मान्
सार्धं देवमयतपञ्चमन्त्रपञ्चपदिविज्ञितमभा
वेसल्लक्ष्मी निर्दग्धभैरवेशः सर्वमहारोग्यः
महापञ्चकमभिलब्ध्य विनियोगार्थ उत्सव

[illegible]

इदमेव मन्त्रं श्रीकण्ठेन शिवः पठ॥ ८ त्रिसन्ध्य

पञ्चकेन यः ॥००॥ मतत्रिष्टु मन्तु अति

तुष्टः सनी विविक्ति धाष्ट्रन्न धूकाशु बलमु

नेत पुष्टधाष विद्व त्रिकयं त्रितु धयत्रि ॥

मन्त्र उमसम वेस

तुष्टधा धुमशु तुः ॥

०१ ॥

मन्त्र उ पश्च स्त्व टस्त्न नहस्त यं कैल मकु

कालधु निमत्ते नि: सम सम, निकित निकित

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥[illegible]॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

ह्यमावः तः प्रति षु: स्वात्मत्तत्त्वमस्म

स्थिते त्रि धते तत्त्व विसृ(ष्टं) म खुली सुवर्णोपमेतहि

त्रपुषः सुवर्णत्वम अमप्रवन्न कमत्त्वप्रतिहि

भ्रित्वं मतत्त्वे पि तत्त्वेन तत्तत्त्वः स्वात्मतत्त्व

तीर्थसूत्र मत विश्व वाणापम ममलमिते

विकल्प ंधम्मलतत्त्व कमत मतम पुष्पमंके

प्रिप्तः प्रः मक्रिम विका अविगतदैम

विक अज्रः सअजन पद्म नम्रा द मत

मत्र पुष्पात्रः उपम मात्मतत्त्वे तीर्थ्यः

स्वात्मतत्त्वे तीर्थे मद्विषममसूत्रिः ॥५८॥

वीरहृदये दृढे हृतेगवैसृवा विशन्तु ॥ ६०

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] कर्षणे [illegible]

[illegible] विशेषः [illegible]

[illegible]

[illegible]

वा. मा ७

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ इति परमेश्वरमतं विश्वकल्याणमनुत्तरं

विश्वविजयप्रदं त्रिमन्त्रं मम मुक्तौ

[illegible] मन्त्रं परमं मन्त्रः कविमिश्रविक्रम

[illegible] मन्त्रं आदर्शे लिखितं भवतु॥

[illegible] श्रीमत्कुलनायकस्य

[illegible] मन्त्रं मम इष्टसिद्धिः॥

वि॰ सं॰ १७१३ शुभ [illegible]

[illegible] पण्डितराजमुकुन्दभट्ट विवीमत

[illegible] लिखितं शुभमस्तु॥